कलावसुधा

ISSN-2348-3660
अप्रैल–जून, 2024
Peer Reviewed

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

संवाद–साक्षात्कार प्रसंग

कलावसुधा

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

■ वर्ष : 24 ■ अंक : 44 ■ अप्रैल–जून, 2024

ISSN-2348-3660

Peer Reviewed

सलाहकार मण्डल

1. पद्मश्री डॉ. पुरू दाधीच
2. पद्मश्री दया प्रकाश सिन्हा
3. पद्मश्री राम दयाल शर्मा
4. पद्मश्री अजीता श्रीवास्तव
5. पद्मश्री प्रो. ऋत्विक सान्याल
6. पद्मश्री रामचन्द्र पुलावर
7. प्रो. सुरेन्द्र दुबे
8. प्रो. राधेश्याम जायसवाल
9. प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास
10. प्रो. कुमकुम धर

समीक्षा मण्डल

1. प्रो. के. शशी कुमार
2. प्रो. संगीता पण्डित
3. प्रो. राजेश शाह
4. प्रो. उषा सिन्हा
5. प्रो. अनिल बिहारी ब्योहार
6. श्रीमती मन्जरी सिन्हा
7. डॉ. दीक्षा नागर
8. शशांक दुबे
9. कुमार अनुपम
10. डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

सम्पादकीय मण्डल

1. डॉ. महेन्द्र भानावत
2. डॉ. श्याम सुन्दर दुबे
3. डॉ. चेतना ज्योतिष ब्योहार
4. प्रो. ऋचा नागर
5. डॉ. अरविन्द कुमार
6. डॉ. वीरेन्द्र निर्झर
7. भारत रत्न भार्गव
8. डॉ. गौतम चटर्जी
9. डॉ. ज़ाकिर अली 'रजनीश'
10. प्रो. डॉ. चन्द्रशेखर कणसे
11. प्रो. डॉ. बलीराम धापसे
12. प्रो. डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह कुशवाहा
13. डॉ. अपूर्वा अवस्थी

प्रधान सम्पादक	सम्पादक	सह–सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय	डॉ. उषा बनर्जी	डॉ. ज्योति सिंह

सम्पादकीय ठिकाना :

कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ – 226029

R.N.I. No. : UPHIN/2001/6035

ISSN-2348-3660

वेबसाइट : https://www.kalavasudha.com

ई–मेल : kalavasudha01@gmail.com

मो. : **8052557608** (प्रधान संपादक)

मो. : **9889835202** (संपादक)

मो. : **8009800436** (सह–संपादक)

''कला वसुधा का वेब अंक आप **Not Nul (https://www.notnul.com)** पर पढ़ सकते हैं।''

कलावसुधा
प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका
■ वर्ष : 24 ■ अंक : 44 ■ अप्रैल–जून, 2024
Peer Reviewed ISSN-2348-3660

साक्षात्कार प्रसंग

सिलसिला.....

कहना–सुनना 4

1. साहित्य एवं मीडिया में साक्षात्कार–एक दृष्टि –डॉ. सुभाष चन्द सिंह 'कुशवाहा' 6
2. जीवन और लय का भाव–पद्मश्री शोवना नारायण –डाक्टर चित्रा शर्मा 11
3. अपनी प्रस्तुतियों को अतिरिक्त बौद्धिकता–रंजीत कपूर –अजय कुमार शर्मा 15
4. बारहवीं शताब्दी की रचना जनकवि जगनिक–डॉ. वीरेन्द्र निर्झर – शाखा बंद्योपाध्याय 21
5. मेरा सौभाग्य था कि पं. जसराज जी जैसे–पं. संजीव अभ्यंकर –डा. प्रकाश चन्द्र गिरि 25
6. रंगमंच में स्त्री के लिए जगह –राजेश कुमार 31
7. हिंदी रंगालोचना और डा. शैलेन्द्र कुमार शर्मा का रंगालोचन कर्म –डा. श्वेता पण्ड्या 34
8. 'क्लासिक सिनेमा ही कविता की गरिमा है' –डॉ. गौतम चटर्जी 40
9. गुरु प्रो. भगवान दास माणिक महंत – डॉ. मानव महंत 43
10. बड़ों के थिएटर से बेहतर बच्चों के थिएटर में होना चाहिए–बबिता पाण्डेय –विजय कुमार सिंह 47
11. 'संवाद' की शक्ति –आलोक शुक्ला 53
12. भक्तिमार्ग को साधते आस्था गोस्वामी की असीमसांगीतिक यात्रा –अमल मिश्र 56
13. लोकमंगल के भावों से ओतप्रोत है बुन्देली साहित्य –डा. नीरज द्विवेदी 60
14. हे गोविंद! राखो शरण, अब तो जीवन हारे–पं. राजन मिश्र –शाम्भवी शुक्ला 66
15. कलाकार भारतीय संस्कृति के ध्वजवाहक हैं–शेखर वैष्णवी –डा. ललित कुमार सिंह 69
16. रंगमंच पर आज जुगाड़ तंत्र चालू आहे–अनिल रंजन भौमिक –यश मालवीय 74
17. ललित कलाओं की शिक्षा शुरुआती स्तर से जरूरी : रुचिरा केदार –डॉ. अवधेश मिश्र 76
18. जिस समाज के पास रंगमंच नहीं होता है, वो दरिद्र होता है (ऋषिकेश सुलभ जी का ऑनलाइन साक्षात्कार) –उमा झुनझुनवाला 82
19. अभिनेता की सीढ़ी बनकर रह गया है रंगमंच–योग मिश्र –शाखा वंद्योपाध्याय 91
20. बहु–प्रतिभाशाली कलाकार : पं. चरण गिरधर चाँद एवं प्रेरणा श्रीमाली –राकेश जैन कोटखावदा 96
21. आत्मानुभूति का माध्यम : ध्रुपद–पं. विनोद कुमार द्विवेदी –डा. निष्ठा शर्मा 101
22. रेडियो से पाडकास्ट तक–शौक भी पैसा भी –अनवारुल हसन 106
23. थियेटर एक पूरी शिक्षा है, एक गम्भीर अध्ययन का विषय है–मुश्ताक काक –पार्वती कुमारी शॉ 108
24. चेहरे ऊपर तैरते–चेहरे कई हजार –संजय श्रीवास्तव 110
25. हबीब तनवीर का वह नाटक, जिसका मंचन 49 साल से हो रहा है –जयनारायण प्रसाद 114

26.	जो इतिहास बच्चों के समक्ष जीवंत रूप से–डाक्टर हेमंत कुमार श्रीवास्तव	–अमरेन्द्र सहाय	116
27.	कर्नाटक पद्धति में गायक ताल–विदुषी श्रीमती शकुन्तला एस. मूर्ति	–आशा श्रीवास्तव	119
28.	बहुमुखी शिल्पी–विजय वास्तव	–गोपाल सिन्हा	121
29.	एक साधक पंचसितारा शहर में	–अशोक कुमार आजाद	124
30.	आलोक चटर्जी के मंच की शुरुआत टैगोर की कविता से	–पंकज स्वामी	130
31.	ब्यूटी विथ ब्रेन–डॉ. सोनाली चक्रवर्ती	–डॉ. रजनी नेलसन	133
32.	नौटंकी के अद्वितीय कलमकार राजकुमार श्रीवास्तव	–अतुल यदुवंशी	136
33.	चित्राअभिनय साधारणीकरण का सिद्धान्त विषय से गहन का दर्शन बोध कराता है मुझे–चित्रा मोहन	–शाखा वंद्योपाध्याय	141
34.	इंदौर किराने घराने का एक चमकता सितारा–पण्डित परितोष पोहनकर	–श्रीमती गोपा सान्याल	146
35.	बाबा की बलिहारी	–संजय श्रीवास्तव	148
36.	नाटक की मूल आत्मा को–मुश्ताक काक	–डॉ. शुभ्रा उपाध्याय	152
37.	Indian Classical Music connects with the Divine (- An interactive session with International Tabla Maestro Pandit Hindole Majumdar).	–Sanghamitra Chakravarty	158
38.	Pt. Birju Maharaj & Vidushi Swami Sen	–Keya Chanda	162
39.	Report : Koi Aur Raasta	–Padmakar Vyas	164
40.	लिटिल थेस्पयन का अपूर्व काव्य मंचन 'परकाइयां' जंग टलती रहे तो बेहतर	–प्रेम कपूर	170
41.	प्रतिक्रिया		174

प्रधान सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय

सम्पादक
डॉ. उषा बनर्जी

सह–सम्पादक
डॉ. ज्योति सिंह

विधि परामर्शी
रमेश चन्द्र पाण्डेय
अजीत श्रीवास्तव

आवरण चित्र
अर्चिता मिश्रा

व्यवस्था सहयोगी
देवाशीष,
पर्ण शिशिर,
ऋचा,
राहुल
रत्नेश

संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली द्वारा आंशिक आर्थिक सहयोग प्राप्त

सर्वाधिकार सुरक्षित
पत्रिका के किसी भी अंश का मंचन प्रकाशन अथवा प्रसारण करने से पूर्व सम्पादक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

पत्रिका से जुड़े सभी व्यक्ति कला सेवा हेतु अवैतनिक एवं अव्यवसायिक हैं।

न्याय क्षेत्र लखनऊ

इस अंक का मूल्य 200/–

सम्पादकीय ठिकाना : कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ – 226029
वेबसाइट : **www.kalavasudha.com** ई–मेल : **kalavasudha01@gmail.com**
मो. : 8052557608, 9889835202

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक डॉ. उषा बनर्जी द्वारा शिवम् आर्ट्स 512/569, दूसरी गली, निशातगंज, लखनऊ से मुद्रित तथा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग लखनऊ – 226029 से प्रकाशित।

प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे 'कला वसुधा' और सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कहना–सुनना

सुधी सहृदय एवं स्नेहिल पाठक गण! सभी को सादर एवं सप्रेम अभिवादन आशा है सभी लोगों ने नव सम्वत्सर एवं पवित्र नवरात्रि के मंगलमय समय में भगवती की विशेष अनुकम्पा प्राप्त की होगी, महसूसी होगी और सपरिवार प्रसन्न होंगे। आगे भी इसी प्रकार उनकी कृपा बनी रहे इसी मंगलमय आशा के साथ कला–वसुधा का यह ''सम्वाद–प्रसंग द्वितीय 'साक्षात्कार विशेषांक' आपके समक्ष है। अभी कुछ समय पूर्व ही हमने सम्वाद प्रसंग–प्रथम में आपसे निवेदन किया था कि हमारा सम्पूर्ण भाव और कर्म संवाद से ही निर्मित होता है। चाहे वह मानसिक हो, वाचिक हो, आंगिक हो या सात्विक हो। मानसिक पहले इसलिये कहा कि हम पहले कुछ कहने या प्रकट करने के लिये मन में उसे मानसिक रूप से गढ़ते हैं फिर उसे प्रकट करते हैं। ठीक कहा न.....

मैं एक बात बताऊँ लगता है आज कुछ अच्छा होने वाला है,

अच्छा, वो कैसे भला?

मैंने आज कुछ अच्छा सा सपना देखा है। ओह, तो क्या सपना देखने भर से कुछ अच्छा होता है? नहीं, सिर्फ सपना देखने से तो कुछ नहीं होता पर–पर क्या?

एक सकारात्मक सपना, अच्छे कर्म के भूल में अवश्य होता है। जीवन की यह विभावरी यदि सुन्दर सकारात्मक एवं सक्रिय सपने दिखाती है तो उसकी सुबह में जरूर उसका संस्कार महकता रहता है, और मन में भी कुछ वैसे ही कर्म की ऊर्जा भी पनपती रहती है और यदि ऐसे कर्मों में हम हमेशा प्रवृत्त भी हो जाये तो हो जीवन का सुप्रभात....उषा

यह कभी मेरे मन में प्रातः कालीन स्वप्न के बाद एक सम्वाद उभरा था और उसे लेखनी में उतार कर कुछ अच्छा करने की ऊर्जा लेकर कला–वसुधा के कला कर्म में एक नयी ऊर्जा के साथ प्रवृत्त हुई थी। ऐसी अनुभूति शायद आप सभी को हुई होगी। खैर सम्प्रति यह सम्वाद प्रसंग द्वितीय का साक्षात्कार विशेषांक आपके समझ प्रस्तुत हो रहा है। साक्षात्कार अर्थात् अभिप्रेत व्यक्ति से सीधा समक्ष होना और उससे अपने अभीप्सित विषय पर कुछ सारगर्भित बात करना। असल साक्षात्कार तो वही होता है जब हम विषय विशेषज्ञ के समक्ष होकर सीधी अनौपचारिक वार्ता के माध्यम से उस समय के प्रति और उसके प्रति उनके वर्ताव की जानकारी लेते हैं। इससे हमें सामने वाले के मनोभाव उसके स्वर काकु और उसकी शरीर भाषा से बहुत कुछ अनकही बातें भी सम्वादित होती है। अन्यथा तो आजकल ऑनलाइन फोन काल, वीडियो कालिंग आदि पर भी साक्षात्कार किये जा रहे हैं। पर वो समग्रता नहीं आ पाती जितना कहीं विशेष स्थान पर मिलकर, चाय आदि की चुस्कियों के साथ गपशप करते हुए साक्षात्कार करने में आनन्द आता है। इसमें साक्षात्कार विद्वान अपनी कला के डिमोस्ट्रेशन के साथ देने की सम्भावना रहती है। एक पते की बात बतायें ऐसे दोस्ताना माहौल में बहुत सी अनकही बातें भी हो जाती हैं जिसे सिर्फ हम सुनते हैं और वे अपनी भाव भंगिमा से समझा जाते हैं। आजकल कुछ शोध छात्र खानापूर्ति के लिये अपने विशेष विषय से सम्बन्धित कुछ प्रश्नावलियों का पेपर बना कर उसे ही लगभग सभी सम्बन्धित व्यक्तियों को पोस्ट या ईमेल या व्हाट्सैप से भेज देते हैं। इसमें अजीब बात यह है कि हर एक व्यक्ति एक जैसी मानसिक सोच का नहीं होता न ही वो एक सा विषय विशेषज्ञ ही होता है, कुछ बातें उसमें उसे स्वभाव के विपरीत लगती है तो थोड़ा निगेटिव असर पड़ने की सम्भावना भी होती है। परन्तु इसके विपरीत अधिकतर अच्छे परिणाम भी मिलते हैं। कभी–कभी तो सवालों के असली प्रश्न का मंतव्य ही स्पष्ट नहीं होता है तो ऐसे में कैसे सारी बात साफ होगी। और प्रश्नों के उत्तरदाताओं की भाव भंगिमा की पृष्ठभूमि भी पता नहीं चलती। कभी–कभी तो प्रश्न की भाषा इतनी गोल मोल होती है कि जवाब ही नहीं सूझता। और अक्सर ही ऐसा भी होता है कि कलाकार या विशेषज्ञ इतने व्यस्त होते हैं कि उनके पास इतना समय ही नहीं निकाल पाते कि उन प्रश्नों का सही सटीक जवाब दे सके तो वे रखे रह जाते हैं। या विलम्ब से जवाब मिलना ही उनकी नियति होती है। यहाँ तुरंत दान महाकल्यान वाली बात नहीं होती है।

हमारी दादी कहती थीं कि ''बिटिया संवेशन खेती नहीं होति है, वहिके तई खुदै मरैक परत है।'' अतः इन संदेशों भर से साक्षात्कार की पूरी गरिमा भी पूर्ण नहीं होती है। अतः उसके लिये दोनों प्रक्षों के मन में सुकून, विषय की जिज्ञासा भरा ज्ञान, देशकाल आदि सब हो तो ऐसे में लिया गया साक्षात्कार का सुख और महत्व ही और है।

आजकल अखबार के रिर्पोटर